आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024

Received: 11/06/2024; Accepted: 14/06/2024; Published: 26/06/2024

# ललमनियाँ : स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति

**अमृता पासी,**

सहायक प्राध्यापिका,

हिन्दी विभाग (स्नातक एवं स्नातकोत्तर),

काँचरापाड़ा कॉलेज (कल्याणी विश्वविद्यालय),

मो : 8100473329,

ई-मेल : amritapasi1@gmail.com

अमृता पासी, **ललमनियाँ : स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024,(120-124)

स्त्री अस्मिता एवं स्त्री चेतना पर अपनी कलम चलाने वाली मैत्रेयी पुष्पा का हिन्दी महिला कथाकारों में प्रमुख स्थान है। उनकी कथा- कहानियों में नारी का सशक्त रूप सामने आया है। स्त्री संघर्ष करते हुए अपनी अस्मिता को बनाए रखती है। इस पुरुषसत्तात्मक समाज में स्त्रियों का भाग्य विधाता पुरुष बना हुआ है। स्त्रियों को अपने अधीन रखकर पुरुष गर्व महसूस करता है। स्त्री चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित उसके पैरों में गुलामी की जंजीर किसी-न-किसी रूप में बंधी रहती है। स्वतंत्र भारत में स्त्रियों को आज भी संघर्ष करना पड़ रहा है। जब तक स्त्री के पाँव घर तक सीमित रहते हैं और चुपचाप सब कुछ सहन करती है तब तक उसे एक अच्छी स्त्री का दर्जा दिया जाता है लेकिन जैसे ही वह अपने अधिकारों के लिए लड़ना शुरू करती है अपने अस्तित्व- निर्माण हेतु घर के बाहर पाँव रखती है तो उसे बुरी स्त्री समझा जाता है। भारतीय समाज में सबसे ज्यादा शोषित एवं अपमानित स्त्री है- "हम इस मान्यता से इंकार नहीं कर सकते कि समाज का सबसे ज्यादा शोषित और पीड़ित मनुष्य स्त्री के रूप में है।"1 भारतीय समाज पुरुषवादी विचारधारा से प्रभावित है जहाँ स्त्रियों को दोयम दर्जे का समझा जाता है। पुंसवादी समाज यह भूल जाता है कि किसी भी राष्ट्र, समाज एवं परिवार के सर्वांगीण विकास के लिए स्त्री और पुरुष की समान सहभागिता अनिवार्य है। आज स्त्रियाँ प्रत्येक क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है फिर भी उन्हें संघर्ष का सामना करना पड़ है। किसी भी राष्ट्र एवं परिवार की स्थिति को इस तरह से समझा जा सकता है- "यह बात जगजाहिर है कि किसी देश की वास्तविक स्थिति देखनी है तो उस देश के गांवों को देखो और यदि किसी समाज की पड़ताल करनी है तो उस समाज की स्त्रियों की जिंदगियों को खंगालो। देश और समाज की असलियत देखने-दिखाने के ये ही मौजूं माध्यम हैं।"2

आधुनिक महिला कथाकारों में मैत्रेयी पुष्पा स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति अपनी रचनाओं के माध्यम से की हैं। ललमनियाँ कहानी संग्रह में स्त्री का संघर्ष अनेक रूपों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। घर-परिवार में स्त्री की अनेक भूमिका होती है। कभी बेटी के रूप में, कभी पत्नी के रूप में तो कभी माँ के रूप में अपने दायित्व का निर्वाह करने हेतु संघर्ष करना पड़ता है।

इस कहानी संग्रह का प्रथम कहानी 'रिजक' में लल्लन जचकी का कार्य कर अपने घर-परिवार की जिम्मेदारियों का निर्वाह करती है। वह किसी कार्य को छोटा या बड़ा नहीं मानती। उसके लिए कर्म ही पूजा है। इससे पहले कि उसकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती उसके बिरादरी वालों ने घोषणा कर दी- "हमारी जनीमानसें बच्चा जनाने घर-घर नहीं जाएंगी। नाल नहीं काटेंगी। बसोर की जाति है, तो क्या हम गंदा काम करेंगे? गंदगी उठाने को पैदा हुए हैं?"3 बस फिर क्या था लल्लन को काम छोड़कर घर में बैठ जाना पड़ता है। घर की आर्थिक स्थिति दिन प्रति दिन खराब होती गई इतनी खराब कि घर के आँगन में बंधी बकरी को बेचने तक की नौबत आ गई जाती है। लल्लन के घर में जब खाने को लाले पड़ गए तब वह बिरादरी की बातों को भूलकर अपने काम पर फिर से लौट जाती है। उसका मानना है कि- "बिरादरी की लकीरें कहीं बनी है हथेलियों में? इनमें तो अपने काम का ही अभ्यास भरा है।"4 इस कहानी में लल्लन के ऊपर परिवार की जिम्मेदारियाँ तो है ही साथ ही उसे अपने बिरादरी एवं समाज का डर भी सताता रहता है। लल्लन का संघर्ष अपने बिरादरी वालों के विरुद्ध जाकर अपने दायित्व का निर्वाह करने में है।

'पगला गई है भागवती!' कहानी में भागो एक संघर्षशील माँ के रूप में सामने आई है। यह संघर्ष अपनी बेटी अनुसुईया को न्याय दिलाने की है। अनुसुईया को भले ही उसने जन्म न दिया हो लेकिन पाला तो था ही। हमारे समाज की दोहरी मापदंड पद्दती ने स्त्री और पुरुष के लिए अलग-अलग नियम बना रखा है। अगर स्त्री प्रेम विवाह करना चाहे तो समाज स्वीकार नहीं करता और उसके लिए कठोर दंड का प्रावधान किया गया है लेकिन अगर वही प्रेम विवाह पुरुष करे तो ताल ठोककर विवाह कराया जाता है। यह कैसी दोहरी मानसिकता है इस समाज की? अनुसुईया को अपने गाँव के मास्टर से प्रेम हो जाता है। वे दोनों प्रेम-विवाह कर लेते हैं। लेकिन अनुसुईया के लिए प्रेम विवाह की सजा के रूप में उसके सामने मौत आती है। उसके पिता ने स्वयं उसे जहर देकर मार डाला। जब यही गलती अनुसुईया का भाई नरेश करता है तो बड़ी धूमधाम से उसका विवाह कराया जाता है- "देखो ठाकुर का दिल। बेटे की राजी में राजी ! जी खोलकर खर्च किया है।"5 यह है हमारे समाज की दोहरी मापदंड पद्दती। भागो इसीके विरुद्ध खड़ी होती है- "मास्टर आन-बिरादरी हतो सो का? भलौ मानस हतो। और जा बहु . . . जा की तुम आरती उतार रहे . . . जा कौन- सी असल ठाकुर की जाई है, जा तैं हिन्दू तक नईयां। और चार महीना गरभ . . .। माधों, फिर आज दै दै बेटा कों जहर . . . जैसे मेरी अनुसुईया को . . ."6 इस कहानी में भागो का संघर्ष अपनी बेटी को न्याय दिलाने हेतु दोहरी नीति के प्रति विरुद्ध दिखाई देता है।

'छाँह' कहानी में बतासो का जीवन दो समुदाय के बीच पिसता रहता है। एक दंगे में उसने अपने पति को खो दिया तो ददुआ ने उसे अपने घर में शरण दिया। ददुआ और बतासो दोनों भिन्न समुदाय के थे जिसके कारण गाँव वाले ददुआ और बतासो को खरी खोटी सुनाते और दोनों को संदेह की दृष्टि से देखा जाता। इतना ही नहीं ददुआ के बेटे आकर बतासो को मारते-पीटते- "उठ, अभी ! मैं कहता हूँ चल ! आइन्दा देखी तो . . . टांग तोड़कर रख दूंगा . . . समझी!" बाल झिंझोड़कर खींचने लगा और चटाचट चार-छः थप्पड़ जड़ दिए।"7 इस प्रकार बतासो को अनेक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। 'बोझ कहानी में अक्षय की मम्मी एक कामकाजी स्त्री के रूप में चित्रित है। उसे घर के साथ-साथ कार्यालय का भी काम देखना पड़ता है। कामकाजी होने के कारण वह कई बार अपने बेटे की इच्छा पूरी नहीं कर पाती। चाहे बेटे अक्षय के लिए टिफिन में पराठा बनाना हो या कहीं बाहर घुमाना हो। वह बेटे के प्रति दायित्व का निर्वाह नहीं कर पाती जिसके कारण वह अपने बेटे की नजर में एक आदर्श मम्मी नहीं बन पाती।

'ललमनियाँ' कहानी में लेखिका ने ललमनियाँ जैसे लोक नृत्य के प्रति रुचि दिखाई हैं। पब एवं डिस्को संस्कृति आज लोक संस्कृति पर संकट बना हुआ है। मौहरो के पिता के मरने के बाद से ही घर की जिम्मेदारी उसके कंधे पर आ जाती है- "जिस दिन पिता मरे थे बुरी घड़ी थी। अम्मा की आँखों में आंसुओं से ज्यादा भूख से बिलखते अपने छोटे-छोटे बच्चों को देखकर लाचारी बरस रही थी। उन्हें याद था कि आज के दिन ललमनियाँ दिखाने जाना था सिमरधरी गाँव में। लेकिन घर में लाश धरी हो तो . . . आने-जाने वालों के सामने बच्चों के पेट में कुलबुलाती आँतों को मसककर शोक दरशाना जरूरी है। अम्मा इस रूढ़ि-रिवाज को नहीं तोड़ पाईं। उसके कान में बोलीं, "बेटी तू चुपके से ललमनियाँ कर आ। परोसा मिलेगा सो उसी परसाद के संग कई दिनों तक पानी पीते रहेंगे। हमारे यहाँ रोज-रोज खाना भी कौन धरने आएगा?"8 यह मौहरो के लिए बहुत ही मुश्किल था एक तरफ पिता की लाश और दूसरी तरफ ललमनियाँ नृत्य करना। तभी से उसने अपने कंधे पर घर की सारी जिम्मेदारी ले ली। इसी ललमनियाँ नृत्य के कारण ही उसके जीवन में जोगेस आता है। जोगेस को तो पहली नजर में ही मौहरो से प्रेम हो जाता है और वह उसके साथ विवाह कर लेता है लेकिन जोगेस के घरवाले मौहरो को स्वीकार नहीं करते जिसके कारण वे दोनों अपनी अलग दुनिया बसाते हैं। फिर कुछ दिन पश्चात जोगेस नौकरी की तलाश में मौहरो को गर्भवती कर कभी न वापस आने के लिए उसे छोड़कर चला जाता है। मौहरो एक बेटी को जन्म देती है। अकेले ही वह कटाई-बुआई, मजदूरी एवं ललमनियाँ नृत्य कर अपनी बेटी पिड़कुल का लालन-पालन करती है। आज कुछ वर्ष पश्चात मौहरो को फिर से शादी में नृत्य करने का काम मिलता है। उसे जिस व्यक्ति के विवाह में नृत्य के लिए बुलाया जाता है वह कोई और नहीं बल्कि उसका पति जोगेस है। मौहरो को अपने जीवन में अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ता है। कभी वह बेटी के रूप में, कभी पत्नी के रूप में तो कभी माँ के रूप में संघर्ष करती जाती है।

'बिछुड़े हुए' कहानी में चन्दा का जीवन संघर्ष से घिरा हुआ है। चन्दा का पति सुग्रीव उर्फ स्वामी शतानन्द जब घर की जिम्मेदारियों को निभाने में असक्षम हो जाता है तो वह चन्दा और अपनी दुधमूंही बच्ची भगना को छोड़कर साधु-संन्यासी बन जाता है। चन्दा अकेले ही बेटी को पाल-पोसकर बड़ा करती है। इतना ही नहीं वह भगना का विवाह भी तय कर आती है। भगना के विवाह के समय ही गाँव में खबर फैल जाती है कि सुग्रीव वापस चला आया है। मगर चन्दा उसे पहचानने से इन्कार कर देती है- "मगना बेटी, तू यहाँ . . . घर में तो कितना काम फैला है ! इस गाँव के आदमी तो बाबरे ठहरे, जो भी साधु आता है, उसे ही तेरा पिता . . ."9 'बारहवीं रात' कहानी में सीता बहु दहेज की शिकार हुई एक प्रताड़ित स्त्री है। दहेज की जो रकम तय की गई थी वो न मिलने पर सीता के ऊपर अत्याचार शुरू हो जाता है। उसके खाने-पीने एवं पहनने-ओढ़ने पर नजर रखी जाती। सीता का जीवन जीना दूभर हो गया था। इसलिए वह आत्महत्या कर लेती है। सीता के आत्महत्या कर लेने के पश्चात उसके पति को पुलिस पकड़कर ले जाती है और उसके सास ससुर फरार हो जाते हैं। अपने बेटे को जेल से बाहर निकालने के लिए चालीस से पचास हजार रुपए की रकम बेटे की दूसरी शादी करके दहेज के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं- "दहेज कम आया, इसकी सजा दुल्हन के लिए मौत होती है कि फिर से वर महोदय का पाणिग्रहण किसी कुंआरी कन्या के साथ कर दिया जाए।"10 इस कहानी में देखा जा सकता है कि दहेज की पूर्ति न होने पर किस तरह से एक नवविवाहिता आत्महत्या कर लेने के लिए विवश हो जाती है।

यह बात जगजाहिर है कि जब आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो केवल एक आदमी शिक्षित होता है लेकिन एक स्त्री के शिक्षित होने से पूरी पीढ़ी शिक्षित होता है। फिर भी भारतीय समाज एवं परिवार में स्त्रियों को शिक्षित होने से वंचित रखा जाता है। 'बेटी' कहानी में मुन्नी एक लड़की होने का दर्द सहती है। वह

एक लड़की है इसलिए उसे शिक्षा अर्जित करने का अधिकार नहीं है। उसे अपने भाइयों की तरह स्कूल जाने का अधिकार नहीं है क्योंकि वह पराए घर की है- "चुप होती है कि नहीं? बहुत जबान चल गई है तेरी। तू लड़कों की बराबरी करती है ! बेटे तो बुढ़ापे की लाठी हैं हमारी, हमें सहारा देंगे। तू पराए घर का दलिद्दर। तेरी कमाई नहीं खानी हमें . . . कह दिया, कान खोलकर सुन ले।"11

'सिस्टर' कहानी एक स्त्री के अकेलेपन की त्रासदी की कहानी है। सिस्टर डोरोथी अस्पताल से सेवानिवृत्त होने के बाद गरीब लोगों की सहायता अपनी सेवा देकर करती हैं। इन्जेक्शन, दावा वगैरह कम पैसे या मुफ़्त में भी देती है। इसी दौरान उनके पास बीमार सुरेशचंद्र और उसका पूरा परिवार आता है। बीमार सुरेशचंद्र की सारी जिम्मेदारी सिस्टर अपने कंधे पर ले लेती हैं- "भाभी निश्चिंत हो गई। पति-सेवा का सारा भार सिस्टर ने ले लिया है। वे कृतकृत्य है। दवा-गोली, उठाना-बिठाना-टहलाना, स्पंज से लेकर डाइट का ध्यान रखना है। वे देवदूत हो गईं इस घर के लिए।"12 सिस्टर डोरोथी सुरेशचंद्र को अपना भाई की तरह मानती हैं और उसके परिवार को अपना परिवार। लेकिन यह रिश्ता एकमात्र छलावा ही निकला। सुरेशचंद्र के ठीक होने के पश्चात जब उसके बेटे की शादी तय हो जाती है तो सिस्टर डोरोथी सुरेशचंद्र के लिए बहन से महज एक नर्स हो जाती है। यही बात सिस्टर को चुभती है। इस कहानी में एक स्त्री के अकेलेपन का फायदा उठाया गया है तथा साथ-ही-साथ उसकी भावनाओं के साथ खेला भी गया।

'तुम किसकी हो बिन्नी?' कहानी भ्रूण हत्या पर आधारित बिन्नी की मर्मांतक पीड़ा को व्यक्त करती है। बिन्नी अपने माता-पिता की अनचाही तीसरी संतान है। जब बिन्नी पेट में थी तब उसकी माँ ने सोनोग्राफी रिपोर्ट के जरिए भ्रूण जाँच कराकर पता कर लिया था कि उसे तो बेटा ही होगा लेकिन जन्म हुआ बेटी के रूप में बिन्नी का। बिन्नी की माँ बिन्नी को अपनी संतान के रूप में स्वीकार नहीं की। बिन्नी अपनी माँ का प्यार पाने के लिए तरस जाती है। जब भी उसका मन आहत होता तो वह उसी डॉक्टर अंकल को खत लिखने बैठ जाती जिन्होंने सोनोग्राफी रिपोर्ट देखकर कहा था की बेटा पैदा होगा- "अंकल जब आप बिन्नी को जानते ही नहीं थे तो फिर कैसे बता दिया कि बिन्नी नहीं होगी, अंजू-गुड़िया का भइया होगा। मम्मी से क्यों झूठ बोला आपने? मेरी मम्मी . . . ?"13 यह कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है जहाँ एक बेटी के साथ उसकी माँ सौतेले जैसा व्यवहार करती है। लड़की होने के कारण बिन्नी को अनेक संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि ललमनियाँ कहानी संग्रह की प्रायः सभी नारी पात्र संघर्ष करती दिखाई देती है। सभी नारी पात्र न केवल संघर्ष से जूझती हैं बल्कि अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह बड़ी ईमानदारी के साथ करती हैं। 'रिजक' में लल्लन अपने बिरादरी वालों के खिलाफ जाकर संघर्ष करती है तो 'पगला गई है भागवती' की भागो समाज के दोहरे मापदंड के विरुद्ध आवाज उठाती है। ललमनियाँ और बिछुड़े हुए कहानी में मौहरो और चन्दा पति परित्यक्त होने का कष्ट सहती है। बारहवीं रात में सीता दहेज का शिकार हो जाती है। बेटी और तुम किसकी हो बिन्नी? कहानी में मुन्नी और बिन्नी लड़की होने का अभिशाप झेलती है। सिस्टर कहानी में सिस्टर डोरोथी अकेलेपन की त्रासदी से पीड़ित है। इस कहानी संग्रह में लेखिका ने ग्रामीण

स्त्रियों के साथ-साथ सहरी स्त्रियों के संघर्ष का चित्रण किया है। मैत्रेयी जी स्त्री जीवन की समस्या एवं संघर्ष का चित्रण सजीव रूप में की हैं। यह कहीं से भी बनावटी या अकृत्रिम नहीं लगती। कहानी को सजीव बनाने

के लिए लोकगीत का भी प्रयोग किया गया है। ग्रामीण संस्कृति को लेखिका ने बड़े ही प्रभावशाली रूप में चित्रित किया है। अपनी कहानियों में ब्रज तथा बुन्देलखंड के अंचल विशेष को प्रकट किया है और इसके लिए लेखिका ने आंचलिक भाषा का प्रयोग किया है। इसके साथ कई अन्य भाषा जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी शब्दों का भी प्रयोग किया है जिससे भाषा की गरिमा और भी ज्यादा बढ़ गई है। प्रतीक एवं बिम्ब के माध्यम से भी लेखिका अपनी बात को सरलतापूर्वक रख पाने में सक्षम हुई हैं।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**


1. पुष्पा मैत्रेयी -प्रथम संस्करण ,नई दिल्ली ,सामयिक प्रकाशन ,आवाज ,2012 -पृष्ठ संख्या ,78
2. पुष्पा मैत्रेयी-प्रथम संस्करण ,किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली ,तबदील निगाहें ,2012 -पृष्ठ संख्या , 143
3. पुष्पा मैत्रेयी -पहला संस्करण ,नई दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन ,ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ , 2002 -पृष्ठ संख्या ,19
4. वही -पृष्ठ संख्या ,21
5. वही -पृष्ठ संख्या ,29
6. वही -पृष्ठ संख्या ,30 ,31
7. वही -पृष्ठ ,43
8. वही -पृष्ठ ,65 ,66
9. वही -पृष्ठ ,80
10. पुष्पा मैत्रेयी -प्रथम संस्करण ,नई दिल्ली ,सामयिक प्रकाशन ,आवाज ,2012 -पृष्ठ संख्या ,10
11. पुष्पा मैत्रेयी -पहला संस्करण ,नई दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन ,ललमनियाँ तथा अन्य कहानियाँ , 2002 -पृष्ठ संख्या ,94
12. वही -पृष्ठ संख्या ,114
13. वही -पृष्ठ संख्या ,134


**********